बुद्धवर्ष २५५०, आषाढ़ पूर्णिमा, १० जुलाई, २००६ वर्ष ३६ अंक १

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

Hindi Patrika on Website: www.vri.dhamma.org/NewslettersHindi/index.html

धम्मवाणी

दुल्लभो पुरिसाजञ्ञो, न सो सब्बत्थ जायति।
यत्थ सो जायति धीरो, तं कुलं सुखमेधति॥
धम्मपद- १९३, बुद्धवग्गो.

श्रेष्ठ पुरुष का जन्म दुर्लभ होता है, वह सब जगह पैदा नहीं होता। वह (उत्तम प्रज्ञा वाला) धीर (पुरुष) जहां उत्पन्न होता है उस कुल में सुख की वृद्धि होती है।

विश्व विपश्यनाचार्य श्री गोयन्काजी की श्रीलंका यात्रा – १० से १९ मई, २००६

(क्रमशः...)

"वैशाख पूर्णिमा महोत्सव" के अवसर पर भारी ट्रैफिक के कारण **१४ मई** की शाम 'धम्मसोभा' से कोलंबो की उनकी वापसी यात्रा में अधिक समय लगा।

रास्तों पर अनेक प्रकार के चित्ताकर्षक लालटेन (कैंडल्स) जगमगा रहे थे और सार्वजनिक स्थानों पर बुद्ध की जीवनी तथा जातक-कथाओं के परिदृश्य सजावटी रंगीन बल्बों से चित्रित किये गये थे, जिनको देखने के लिए अपार जनसमूह उमड़ पड़ा था। बहुत से लोगों ने रास्तों के किनारों पर दूकानें लगा रखी थीं, जहां दर्शकों को मुफ्त में भोजन तथा पेय पदार्थ दिया जा रहा था।

वैशाख पूर्णिमा के दिन बुद्ध का जन्म हुआ था, उसी दिन उन्होंने बोधि प्राप्त की थी और उसी दिन उनका महापरिनिर्वाण हुआ था। इसलिए यह बुद्ध के अनुयायियों के लिए वैसे ही बड़ा महत्त्वपूर्ण सप्ताह होता है, जबकि यह तो २५५०वीं वर्षगांठ है जो पूरे विश्व में बड़े उत्साहपूर्वक मनाई जा रही है।

१५ मई का दिन यात्रियों के लिए विशेष उत्साहवर्धक दिन था। आज प्रातःकाल कोट्टे (कोलंबो) के **नाग विहार** में संघदान का आयोजन किया गया था। इसमें भाग लेने के लिए द्वीप के बहुत से भागों से सभी निकायों के १२५ भिक्षु पधारे थे। इस विशेष संघदान में म्यंमा, थाईलैंड, कंबोडिया तथा लाओस के भिक्षु-भिक्षुणियों ने भी भाग लिया। यात्रियों ने धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हुए भिक्षुओं को आनंदपूर्वक भोजन एवं चीवरादि का दान दिया और उनकी आवभगत की। भाग लेने वाले भिक्षुओं में लगभग ८५ पुराने साधक थे। भिक्षुसंघ ने विपश्यनाचार्य श्री गोयन्काजी को आशीर्वाद दिया। अंत में पू. गुरुदेव ने अपने संक्षिप्त प्रवचन में दान स्वीकार करने के लिए भिक्षुओं के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि मुख्यतः संघ के ही सत्प्रयास से धर्म का प्रसार होता है। इसलिए संघ अत्यंत पूजनीय है। अपने तथा बहुजन के कल्याण के लिए उन्होंने भिक्षु संघ को विपश्यना शिविरों में भाग लेने का निमंत्रण दिया।

शाम में भिन्न-भिन्न महाविहारों के वरिष्ठ भिक्षुओं की १५० वर्ष पुरानी **"कोट्टे श्री कल्याणी सामग्रीधर्म महासंघ सभा"** ने पू. गुरुदेव को बधाई दी और उन्हें **"परियत्ति विशारद"** की मानद उपाधि से सम्मानित किया। पू. गुरुदेव को यह सम्मान भगवान बुद्ध की व्यावहारिक शिक्षा 'विपश्यना' को स्पष्ट रूप से व्याख्यायित करने, उनके द्वारा लिखी गयी हिंदी एवं अंग्रेजी में प्रकाशित अनेक पुस्तकें और उनके विश्व की विभिन्न भाषाओं छपे अनुवाद, प्रवचनों के सीडीज, वीसीडीज, कैसेट्स आदि द्वारा इसके प्रचार-प्रसार तथा भारत एवं विश्व के अनेक देशों में शताधिक विपश्यना केंद्रों की स्थापना जैसे अद्भुत और महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया, जिनके द्वारा हजारों-लाखों लोगों को सुख-शांति मिलती है।

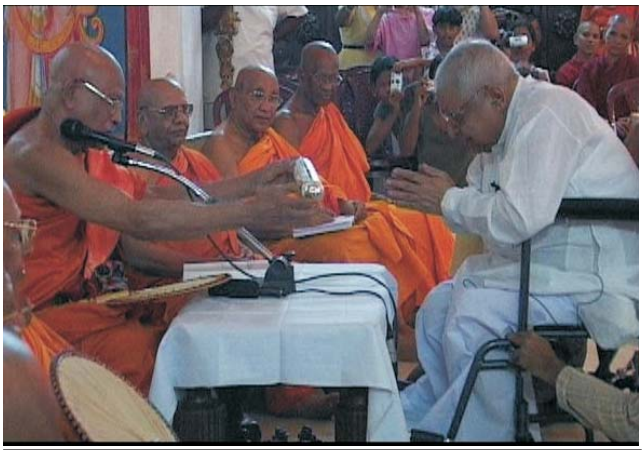

'कोट्टे श्री कल्याणी सामग्रीधर्म महासंघ स भा' के महानायक के हाथों **'परियत्ति विशारद'** सम्मान पत्र सादर स्वीकार करते हुए पूज्य गुरुदेव

महासंघ सभा के महानायक महाथेर ने पूज्य गुरुजी के काम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। विपश्यना विशोधन विन्यास के पालि प्रोजेक्ट में बहुमूल्य सहयोग देने वाले भंते चन्दविमल ने सिंहली तथा हिन्दी में भाषण दिया। उन्होंने कहा कि श्री गुरुजी (भारत में श्री गोयन्काजी को गुरुजी कहने का प्रचलन है) का काम गंभीर अभ्यासियों या साधकों में इतना सुप्रसिद्ध है कि गुरुजी को किसी उपाधि की आवश्यकता नहीं। भंते रतनपालजी ने भी अंग्रेजी और हिंदी में बताया कि वे स्वयं कैसे गुरुजी के संपर्क में आये। अपनी विशिष्ट सरल एवं संक्षिप्त शैली में उन्होंने पू. गुरुजी के जीवन का उद्देश्य स्पष्ट किया। अधिकतर यात्री गलियारे के मध्य में बैठे भिक्षुसंघ द्वारा पू. गुरुजी को दिये गये प्यार और स्नेह के शब्द सुन रहे थे। श्रोता-मंडली में विपश्यना के बहुत से वरिष्ठ आचार्य सम्मिलित थे।

पू. गुरुजी को दी गयी बधाई के उत्तर में उन्होंने कहा कि भिक्षुओं द्वारा सम्मानित होकर वे संकोच का अनुभव कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह वैसा ही है जैसे दादा अपने पोते को उत्साहित करने के लिए दुलार-पुचकार रहा हो। उन्होंने कहा कि संघ के आशीर्वाद से उन्हें धर्मसेवा के लिए बहुत शक्ति मिली है।

१६ मई को पू. गुरुजी को प्रतिष्ठित **"भंडारनायके मेमोरियल इन्टरनेशनल कॉनवेंशन हॉल"** (BMICH) में 'मिनिस्ट्री ऑफ रिलिजियस अफेयर्स' की ओर से प्रवचन देने के लिए आमंत्रित किया गया था। यह भी बुद्ध के महापरिनिर्वाण जयंती के अवसर पर मनाये जाने वाले उत्सवों का एक भाग था। प्रवचन १०:३० बजे होना था पर लोग प्रातःकाल ८:३० बजे से ही आने लगे थे। बहुत से भिक्षु भी उनका प्रवचन सुनने आये थे। अन्य संप्रदायों के पुरोहित वर्ग के लोग तथा आम जनता ने भी यहां तथा और अन्य स्थानों पर प्रवचन सुने थे। पू. गुरुजी ने लगभग एक हजार संभ्रांत लोगों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि बुद्ध धर्म के प्रति गहरे पूर्वाग्रह के बावजूद उन्होंने इसे कैसे स्वीकार किया। बुद्ध एक महान वैज्ञानिक थे जिन्होंने दुःख का मूल कारण और उससे छुटकारा पाने का उपाय अर्थात वास्तविक परम सुख पाने का मार्ग खोज निकाला। उन्होंने देखा कि जो भी धर्म चित्त में उत्पन्न होते हैं, वे शरीर पर संवेदनाओं के साथ ही उत्पन्न होते हैं। इन संवेदनाओं के प्रति प्रतिक्रिया करके लोग अपना दुःख बढ़ाते हैं। अगर कोई इन संवेदनाओं को तटस्थ भाव से देखना सीख जाता है और साथ ही अनित्यता का अनुभव करने लगता है तो वह दुःख से बाहर आने लगता है। प्रवचन पश्चात प्रश्नोत्तर सत्र हुआ जिसका सार निम्नलिखित है –

प्रश्न – क्या सतिपट्ठान और विपश्यना दोनों एक हैं?

उत्तर – बिल्कुल एक ही हैं।

प्रश्न – क्या इसी जीवन में निर्वाण पाना संभव है?

उत्तर – हां, संभव है।

प्रश्न – बुद्ध धर्म को सुरक्षित रखने में श्रीलंका की क्या भूमिका है?

उत्तर – आश्चर्यजनक भूमिका है। श्रीलंका में चौथी संगीति हुई। बुद्ध की वाणी को सुरक्षित रखने में यह एक महत्त्वपूर्ण कड़ी बनी। सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका यह है कि यहां बुद्धवचन को सर्वप्रथम लिपिबद्ध किया गया। पटिपत्ति की शुद्धता के लिए परियत्ति बहुत महत्त्वपूर्ण है। अब विपश्यना की सहायता से बुद्ध धर्म के पुनः जागरण का समय आ गया है। गृहस्थों के साथ-साथ भिक्षुओं को इस कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

प्रश्न – बिना प्रव्रजित हुए क्या कोई गृहस्थ निर्वाण का मार्ग-फल प्राप्त कर सकता है?

उत्तर – प्राप्त कर सकता है यदि वह धर्म पथ पर चलता हो।

प्रश्न – क्या सिर्फ मेत्ता भावना निर्वाण तक ले जा सकती है?

उत्तर – मेत्ता भावना करना अच्छा है; लेकिन निर्वाण की प्राप्ति अनुशय क्लेशों को समूल नष्ट किये बिना संभव नहीं और अनुशय क्लेशों का समूलोच्छेद विपश्यना से ही संभव है। निर्वाण लोभ, द्वेष तथा मोह से मुक्ति है। इसकी प्राप्ति के लिए इन विकारों को नष्ट करना ही होगा।

प्रश्न – हम लोग बुद्धानुस्सति से न प्रारंभ करके आनापान से विपश्यना क्यों प्रारंभ करते हैं?

उत्तर – उनके लिए जिनकी भक्ति बुद्ध के प्रति है, बुद्धानुस्सति से प्रारंभ कर सकते हैं, लेकिन यह मात्र प्रारंभ ही होगा। इसके आगे जाकर आनापान और विपश्यना का अभ्यास करके धर्मपथ पर चलना होगा।

प्रश्न – सम्पजञ्ञ का महत्त्व क्या है?

उत्तर – मन को निर्मल बनाने के लिए संवेदनाओं के प्रति सब समय जागरूकता तथा अनित्यबोध के साथ तटस्थता का अभ्यास बहुत महत्त्वपूर्ण है। कुछ लोग यह आलोचना करते हैं कि विपश्यना मात्र एक ध्यान विधि है, यह बुद्ध धर्म का सार नहीं है। बुद्ध की शिक्षा का और क्या सार हो सकता है? शील, समाधि तथा प्रज्ञा का अभ्यास ही बुद्ध की संपूर्ण शिक्षा है।

प्रश्न – पश्चिमी देशों के अबौद्ध विपश्यना को कैसे स्वीकार कर रहे हैं?

उत्तर – क्योंकि बुद्ध की शिक्षा का स्वभाव ही ऐसा है कि इसके अभ्यास और विपश्यना ध्यान भावना से सबको लाभ मिलता है। तथाकथित धर्मान्तरण आवश्यक नहीं। इसके अभ्यास से कोई भी व्यक्ति अच्छा मनुष्य बन सकता है।

प्रश्न – ऐसा विश्वास किया जाता है कि विपश्यना बड़ी गंभीर ध्यान विधि है और यह भिक्षुओं के लिए ही उपयुक्त है।

उत्तर – निश्चय ही यह भिक्षुओं के लिए उपयुक्त है, पर यह गृहस्थों के लिए भी उतनी ही आवश्यक है। बुद्ध काल में भी बहुत से गृहस्थों ने ऊंची अवस्थाएं प्राप्त की थीं। निस्सन्देह, यह भिक्षुओं के लिए आसान है क्योंकि उन्होंने बुद्ध की शिक्षा के प्रति अपना जीवन समर्पित कर दिया है। धर्म के पथ पर प्रगति करने तथा दूसरों को इस पथ पर चलने के लिए सहायता करने की उनकी जवाबदेही बहुत अधिक है।

प्रश्न – आप की भेंट किसी स्रोतापन्न या अर्हत से हुयी है?

उत्तर – हां, मैं सौभाग्यशाली हूं। मैं एक अर्हत के निकट संपर्क में आया और मेरी भेंट बहुत से स्रोतापन्नों से हुयी है।

प्रश्न – आप त्रिरत्नों को स्वीकार करने के लिए इतने साधकों को कैसे मनाते हैं अर्थात उनके संदेहों को कैसे दूर करते हैं?

उत्तर – मैं उन्हें बताता हूं कि वे त्रिरत्नों के गुणों की शरण में जा रहे हैं। उनको मुक्ति दिलाने वाला कोई बुद्ध नहीं है। बुद्ध के समय भी उन्होंने केवल रास्ता ही दिखाया। उनसे प्रेरणा पाने के लिए ही कोई बुद्ध के गुणों की शरण जाता है। बुद्ध स्वयं मूर्तिमान धर्म हैं और धर्म संपूर्ण मुक्ति का सार्वजनीन पथ है। संघ की शरण जाने का अर्थ किसी व्यक्ति की शरण जाना नहीं। यह संत के गुणों से युक्त संघ की शरण में जाना है। मैं किसी को बौद्ध बनने के लिए नहीं कहता अर्थात मैं किसी का धर्मांतरण नहीं करता। जो हिन्दू है वह हिन्दू ही रहे, लेकिन वह धार्मिक हिन्दू बने, अच्छा हिन्दू बने। उसी तरह मुसलमान, ईसाई, सिक्ख और बौद्ध क्रमशः अच्छा मुसलमान, अच्छा ईसाई, अच्छा सिक्ख और अच्छा बौद्ध बने।

प्रवचन के बाद यात्रीगण कोलंबो से रवाना हो गये, परंतु पू. गुरुजी वहीं रहे। उन्होंने यात्रियों से कहा था कि यद्यपि उनकी इच्छा उनके साथ जाने की थी पर खराब स्वास्थ्य के कारण वे ऐसा नहीं कर पायेंगे। कुछ वर्ष पहले वे विस्तार से श्रीलंका की धर्मयात्रा कर चुके थे। यात्रीगण अनुराधपुर, दंबुला तथा पोलोन्नरुवा गये। इसके

पहले वे लोग कैंडी के दंत-मंदिर और आलू-विहार, जहां चौथी धर्म संगीति हुई थी, देख आये थे।

१६ मई की शाम को पू. गुरुजी उन धर्म सेवकों से मिले जो धम्मसोभा के लिए काम कर रहे थे अथवा जो यात्रा पर थे। भंते रतनपाल जी ने पू. गुरुजी से उनका परिचय करवाया। भंते रतनपाल जी ने निःस्वार्थ सेवा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। बाद में पू. गुरुजी ने उनसे कहा – धर्मदान सब प्रकार के दानों से श्रेष्ठ है। केवल आचार्य और स. आचार्य ही साधकों को धर्म का दान नहीं देते, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले वे धर्म सेवक भी धर्मदान ही देते हैं जो मुख्य आचार्य तथा स. आचार्यों के काम को आसान बनाने के लिए हाथ बँटाते हैं। वे सभी धर्मदान के अभिन्न अंग हैं, धर्मदान में भागीदार हैं।

पू. गुरुजी ने उन्हें यह भी कहा कि श्रीलंका को एक दूसरे विपशयना केंद्र की सख्त जरूरत है। जो लोग धम्मसोभा के निर्माणकार्य में लगे हैं, वे बड़ा महत्त्वपूर्ण काम कर रहे हैं जिससे पारमी में पके श्रीलंका के लोगों का ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया के लोगों का कल्याण होगा।

१७ मई को श्रीलंका सरकार के प्रधान मंत्री द्वारा BMICH में आयोजित एक सार्वजनिक समारोह में पू. गुरुजी को सम्मानित किया गया, बधाई दी गयी। इसके तुरंत बाद वे राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक अन्य समारोह में भाग लेने गये, जहां श्रीलंका सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने **"जिन सासन सोभन पटिपत्ति धज"** की उपाधि से उन्हें समलंकृत किया। बहुत से देशों के संघ-प्रमुख अथवा संघ-प्रतिनिधि यहां उपस्थित थे। यहां पू. गुरुजी

श्रीलंका के राष्ट्रपति महामहिम श्री महिंद राजपक्ष द्वारा पूज्य गुरुदेव को **'जिन सासन सो न पटिपत्ति धज'** सम्मान पत्र भेंट करना।

से धर्म प्रवचन देने का अनुरोध किया गया। उन्होंने धर्म की महिमा बताते हुए कहा कि यदि देश में शांति लानी है तो देश के बड़े-बड़े नेताओं को शील, समाधि तथा प्रज्ञा के पथ पर चलना होगा। उन्होंने यह विश्वास व्यक्त किया कि देश में शीघ्र ही शांति आयगी क्योंकि इस देश में धर्म का बड़ा लंबा इतिहास है। इस संबंध में विपश्यना की भूमिका महत्त्वपूर्ण होगी।

एक ही शाम में दो स्थानों पर जाने तथा दो समारोहों में भाग लेने से पू. गुरुजी थक गये थे। लेकिन फिर भी समय निकाल कर वे धम्मसोभा के उन धर्मसेवकों से मिले जो आचार्य-निवास बनाने, एक दिवसीय शिविर के लिए आवास आदि की सुविधाएं जुटाने तथा केंद्र तक पहुँचने के लिए सड़क-निर्माण के कार्य में दिन-रात अथक परिश्रम कर रहे थे। ये लोग १६ की शाम को पू. गुरुजी से नहीं मिल पाये थे। आज उनका साक्षात दर्शन करके उन्हें बड़ी खुशी हुई और उन्होंने संकल्प किया कि वे छह महीने के भीतर इस केंद्र का निर्माण कार्य पूरा कर देंगे।

१८ मई की सुबह पू. गुरुजी से और लोग मिलने आये। शाम में उन्होंने कोलंबो के रामकृष्ण मिशन में एक प्रवचन दिया। प्रवचन का तमिलनाडु के एक स. आचार्य द्वारा तमिल अनुवाद साथ-साथ किया गया। (ये स. आचार्य तमिल लोगों में विपश्यना के प्रति जागरूकता लाने के लिए विशेष रूप से श्रीलंका आये थे।) यहां तमिल लोगों के लिए जिस हॉल में प्रवचन होना था उसमें केवल २५० लोग ही बैठ सकते थे। पू. गुरुजी के पधारने से लोगों में बढ़ते हुए उत्साह को देखते हुए आयोजकों ने स्वामी आत्मघनानंद जी से स्थान बदल देने का अनुरोध किया। स्वामी जी ने कृपा कर वैसा ही किया और सारी व्यवस्था बड़े ओडिटोरियम में की गयी, जहां ८०० से अधिक लोग बैठ सके। यहां पर श्रीलंका संसद के अध्यक्ष भी सपरिवार पधारे और धर्मश्रवण किया। *(अभी समाचार मिला कि संसद अध्यक्ष एक केंद्रेतर शिविर से बहुत लाभान्वित हुए और इस प्रकार वहां पुनः दो शिविर लगवाने की मांग हुई, जिसमें उनके परिवार के अन्य सदस्य भी भाग ले रहे हैं। यह पूज्य गुरुजी की धर्मयात्रा के शुभ परिणाम और धर्म प्रसार के अच्छे लक्षण हैं।)*

पू. गुरुजी ने बताया कि कैसे उनके मन में बुद्ध की शिक्षा के बारे में अनेक मिथ्या धारणाएं थीं। जबकि उन्होंने अपने अनुभव से जाना कि उनकी शिक्षा सभी के लिए कितनी कल्याणकारी है। उन्होंने यह भी कहा कि विपश्यना के अभ्यास से लोग अपनी संस्कृति के अधिक निकट जायँगे तथा उनकी संस्कृति दृढ़ ही होगी।

पू. गुरुजी के श्रीलंका आने से वहां के लोग खूब उत्साहित थे लेकिन साथ ही उनके खराब स्वास्थ्य को लेकर उनके मन में चिंताएं भी थीं। पू. गुरुजी के आने से विपश्यना को जो प्रोत्साहन मिला उससे वे लोग बड़े खुश थे। इतने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद उनका स्वास्थ ठीक रहा, इस बात से लोगों ने राहत की सांस ली।

१९ मई को दोपहर बाद पू. गुरुजी श्रीलंका से चेन्नई के लिए रवाना हुए। उसी दिन यात्रीगण कोलंबो लौटे और दूसरे दिन वे भी चेन्नई जाने की तैयारी में लग गये। साधकों की हाल की म्यंमा तथा श्रीलंका की यात्रा एक उल्टे प्रवाह की तरह है। इन देशों के लोगों के लिए भारत और नेपाल पवित्र तीर्थ-स्थल थे जहां बुद्ध पैदा हुए थे और जहां उन्होंने धर्म सिखाया था। इसलिए वे तीर्थ करने योग्य थे। परंतु अब भारत तथा दूसरे देशों के साधक इन देशों में आदर, कृतज्ञता तथा भक्ति भाव से तीर्थ यात्रा करते हैं क्योंकि इन देशों ने धर्म तथा विनय की शुद्धता बनाये रखने में अहम भूमिका निभाई।

यात्रा के अंत में श्रीलंका के स्थानीय साधकों ने हर यात्री को अनुराधपुर के **बोधिवृक्ष** का चित्र भेंट किया, जिसकी रक्षा २३०० से भी अधिक वर्षों से की गयी है। इसे सम्राट अशोक की पुत्री भिक्षुणी संघमित्रा यहां लेकर आयी थी। समय-समय पर म्यंमा की सहायता से इस द्वीप के लोगों ने बुद्ध की शिक्षा का पालन किया तथा दो

सहस्राब्दियों से अधिक समय तक इसकी रक्षा की। बोधिवृक्ष पुराना हो गया है। इसे सहारे की आवश्यकता है। पटिपत्ति का मजबूत सहारा पाकर श्रीलंका का बड़ा कल्याण होगा। आशा की जाती है कि पू. गुरुजी के यहां आगमन से यह धर्मवृक्ष जो मूलतः भारत से आया तथा यहां के लोगों का कल्याण करता रहा, जब कि भारत में लुप्त हो गया था, वह अभिसिंचित होकर पुनः हरा भरा हो उठेगा।

श्रीलंका में शांति और समृद्धि हो! सबका मंगल हो!

नए उत्तरदायित्व

भिक्षु आचार्य एवं आचार्य (क्रमशः)

1.Ven. Ratanapala (Bhikkhu Ācarya), **'धम्मसोभा'** तथा श्रीलंका की धर्मसेवा

2. Mrs Damayanthi Ratwatte (Ācarya), **'धम्मकूट'** तथा श्रीलंका की धर्मसेवा

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1-2. Mr. Roy Menezes and Mrs. Suleka Puswella, (Sri Lanka/USA)
श्रीलंका में भदंत रतनपालजी एवं श्रीमती दमयंती रतवत्ते की सहायता तथा अमेरिका में होने पर श्रीमती गेल एवं श्री जॉन बिअरी की सहायता

3. U Thein Aung, Myanmar,
म्यंमा के भिक्षु-शिविरों की धर्मसेवा

क्षेत्रीय आचार्य

1-2. Mr. John & Mrs. Joanna Luxford, UK
पूरे यूरोप की एवं यूरोप के सहायक आचार्यों को प्रशिक्षण देने की धर्मसेवा

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

१-२. श्री गोपाल शरण एवं श्रीमती पुष्पा सिंह, लखनऊ
धम्मलिच्छवी (वैशाली), धम्मबोधि (बोधगया) सहित बिहार की धर्मसेवा; धम्मलक्खण (लखनऊ) तथा धम्मसुवत्थी (श्रावस्ती) की धर्मसेवा

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री बिक्रम डांडिया, इगतपुरी
2. Mr. Eric Lataste, France

दोहे धर्म के

धन्य धरम ऐसा मिला, चित्त-शुद्धि का पंथ।
हिंसक अंगुलिमाल सा, सहज बन गया संत॥
बड़े भाग्य से मुक्ति का, पाया पंथ महान।
भव-भय व्याकुल जीव का, हुआ परम कल्याण॥
सब माटी की पुतलियां, मिलें राख या रेत।
साथ चले बस धरम ही, पुण्य लोक सुख हेत॥
धर्म जगे तो सुख जगे, दुःख उखड़ता जाय।
तृष्णा की तड़पन मिटे, तृप्ति सुधा रस पाय॥
धर्म जगे तो सुख जगे, मुक्ति दुखों से होय।
कर्मों के बन्धन कटें, ग्रंथि विमोचन होय॥
दुखियारों से जग भरा, सुखिया दिखे न कोय।
धर्म जगे तो सुख जगे, दुखिया रहे न कोय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

बुद्ध धरम अर संघ पर, स्रद्धा जगी अटूट।
मिलग्यी विमल विपस्सना, पीवूं इमरत घूंट॥
बुद्ध धरम रो, संघ रो, यो साचो सनमान।
जीवन मँह जागै धरम, हुवै जगत कल्याण॥
चालत-चालत धरम पथ, पाप विखंडित होय।
तो संतां रै संघ रो, साचो पूजन होय॥
नमस्कार है संघ नै, किसा' क स्रावक संत।
धरम धार उजळा हुया, निरमळ हुया भदंत॥
धरम रतन रक्छित रख्यो, धन! धन! संत समाज।
सेवा ही करता रह्या, जग दुख मेटण काज॥
जीं रो मन निरमळ हुयो, आर्य संघ है सोय।
सत्य बचन रै तेज स्यूं, दुक्ख विमोचन होय॥

देबेनरा मून्दड़ा परिवार
गोश्वारा रोड, पंडित मेघराज मार्ग,
विराट नगर, नेपाल.
फोनः ०९९-२१-५२७६७१
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५५०, आषाढ़ पूर्णिमा, १० जुलाई, २००६**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१**. Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- **LII/RNP-WPP-03**

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org